प्रस्तावना

हिन्दी कथा-साहित्य के अध्ययन के दौरान 'नई कहानी' आन्दोलन के रचनाकारों ने मुझे वहुत प्रभावित किया। पाठ्यक्रम में 'दोपहर का भोजन' पढ़ने के वाद मुझे ऐसा लगा कि इस रचनाकार की अन्य रचनाओं से भी परिचित होना आवश्यक है। मैंने अमरकांत के समकालीन तथा उनके पूर्ववर्ती कथाकारों को पढ़ा था। फणीश्वरनाथ 'रेणु' एवं अमरकांत दोनों ही रचनाकार मुझे प्रिय लगे। दोनों के यहाँ वृहद् समाज से जुड़ने की वात दिखाई देती है। 'रेणु' का कथा साहित्य अंचल विशेष से संबंधित होने के कारण 'स्व' का निदर्शन कराने मे सहायक न वन सका। मध्यवर्गीय समाज से संबंध रखने के कारण अमरकांत के कथा साहित्य ने मुझे ज्यादा आकर्षित किया। इसके साथ इनकी रचना सहजता के वीच गंभीरता का निदर्शन है। सहज ही समाज की गंभीर समस्या को कथा साहित्य के माध्यम से सामने लाना विस्तृत समाज से संपृक्त एवं उसकी सही समझ का परिणाम है। इनके कथा साहित्य के अध्ययनोपरान्त समाज के प्रति समझ वलवती हुई।

अमरकांत ने उपन्यास और कहानी दोनों विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी। दोनों विधाओं पर समान अधिकार रखने वाले इस रचनाकार को वार-वार आलोचकों ने सफल कहानीकार के रूप में ही स्थापित किया। उपन्यासकार के रूप में इनकी कोई पहचान नहीं वन पायी। वशर्ते इन्होंने उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की समस्या को करीने से प्रस्तुत किया है। कथा साहित्य का मध्यवर्ग से नाता प्रगाढ़ रहा है। समाज को देखने का नजरिया प्रत्येक कथाकार का अलग-अलग होता है। इसी के माध्यम से रचनाकार अपनी पहचान वनाता है। कहानियों के माध्यम से जिस रूप में अमरकांत को जाना गया। उसी के साथ जरूरी है उपन्यासों के माध्यम से इनके सामाजिक दृष्टिकोण को जाना जाय। इन्होंने तकरीवन आठ महत्वपूर्ण उपन्यासों रचना की। परन्तु हिंदी आलोचना एवं शोधकार्य की स्थिर दृष्टि ने उनके कहानीकार रूप को ही स्थापित किया है। उपन्यास-सृजन को लगभग दर-किनार कर दिया। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये 'अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्ग' नामक विषय को चुना। इस विषय पर काम करते हुये उपन्यासों में समाये मध्यवर्ग की स्थिति पर ज्यादा ध्यान दिया है।

अमरकांत ने अपने कथा साहित्य में निम्नमध्यवर्ग एवं मध्यवर्ग का यथार्थ चित्रण किया है। प्रगतिशील समाज की चाहत रखने वाले अमरकांत ने जीवन का सीधा और खुला साक्षात्कार किया है। समाज की अच्छाई तथा वुराई से भली-भाँति परिचित हैं। कहानियों तथा उपन्यासों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज तथा मौजूदा व्यवस्था को सामने रखा है। इनके विस्तृत रचना संसार में सभी प्रकार के छोटे-वड़े एवं अच्छे-वुरे लोग हैं। व्यक्तियों से वात प्रारंभ कर व्यवस्था तक पहुँचते हैं। हर प्रकार के छद्म, ढोंग, सामाजिक विसंगतियों और परिवेशगत अंतर्विरोध की निर्मम चीरफाड़ करते हुये, एक वेहतर, समाज के लिये लेखक संघर्षरत दिखता है। नयी कहानी के दौर में जब अधिकांश कहानीकार काव्य की तरह विम्व संकेत और संगीत के राग तलाश रहे थे और उसको लाने का प्रयास कर रहे थे, उस समय अमरकांत ने इसकी परवाह न करते हुये विना लाग-लपेट के अपनी वात कथा साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत कर समकालीन रचनाकारों में विशिष्ट वन गये।

अमरकांत के कथा साहित्य के केन्द्र में स्वातंत्र्योत्तर भारत का मोहभंग और निराशा है। कहानी मोहभंग की स्थितियों को विभिन्न तरह से प्रस्तुत करती है। अमरकांत के उपन्यास मध्यवर्गीय समाज के भीतर बढ़ती अतिरिक्त स्वार्थपरता के कारण दिशाहीनता एवं गैरजिम्मेदरानापन को उघाड़ते हैं। मध्यवर्गीय समाज के व्यक्ति, परिवार, परिवेश में होने वाले परिवर्तनों को अमरकांत ने जिस गहरायी से पकड़ा है, वह अन्यत्र मुश्किल से मिलता है। इस सच्चाई की व्यापक छानबीन के लिये रचनाकार के कथा साहित्य ने उक्त विषय के आधार पर देखने के लिये विवश किया।

अस्तु, मेरा विषय है 'अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्ग।' 'अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ' मेरे शोध-कार्य का आधार है। साथ ही, मैंने अपने शोध-कार्य में अमरकांत की प्रमुख औपन्यासिक कृतियों को भी मनोयोग पूर्वक अध्ययन किये हैं।

शोधविषय-परिधि को ध्यान में रखकर क्रमबद्ध अध्ययन के लिये पूरे प्रबंध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में मध्यवर्ग की अवधारणा को स्पष्ट करने का भरसक प्रयास किया गया है। इसके तहत इस वर्ग के उदय तथा उसकी सामान्य मान्यता और उसकी प्रारंभिक विशेषता का भी उल्लेख है। इस वर्ग की अवधारणा, स्वरूप, क्षेत्र, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को सामने लाते समय इस का ध्यान रखा गया है कि ज्यादा से ज्यादा इसके भारतीय परिप्रेक्ष्य को सामने लाया जाय। मध्यवर्ग बहुरंगी होता है। अत: एक ही देश में कोई स्थिर परिभाषा नहीं बनाई जा सकती है। इसके बावजूद विभिन्न भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के आधार पर इसकी अवधारणा को सामने लाने की कोशिश की गयी है। भूमंडलीकरण के बाद नव मध्यवर्ग का उदय हुआ। इसने मध्यवर्ग की समस्त पुरानी मान्यताओं को ध्वस्त कर दिया। अर्थ-लिप्सा इस कदर इसमें बढ़ी कि इसने मध्यवर्गीय समाज की रीढ़ परिवार को नयी परिभाषा दी। परिवार के भीतर की सारी संवेदना दरकिनार कर दी जाने लगी। स्वार्थपरता जोर मारने लगी। इन सबका लेखा-जोखा इस अध्याय में प्रस्तुत है।

मध्यवर्गीय समाज पर उपभोक्तावादी बाजार का जबरदस्त प्रभाव पड़ा। मध्यवर्गीय समाज बाजार द्वारा संचालित हो रहा है। परिणामस्वरूप मध्यवर्ग का रचनात्मकता से नाता टूटा और उसकी प्रदर्शनप्रियता बढ़ती गयी। भारत सरकार बाजार के दबाव में आते हुये 'पे रिविजन' ही बार-बार कर रही है। इसके बाद भी यह वर्ग दिखावे के कारण आर्थिक विसंगतियों से ऊपर नहीं हो रहा है। बाजारवादी प्रवृत्ति की देन है कि मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति बाजार की चीजों को आवश्यकता के आधार पर ललचायी निगाह से नहीं देख रहा है बल्कि यह दिखावे की प्रवृत्ति का शिकार होने के कारण नयी वस्तुओं को चाह रहा है। इसके भीतर बढ़ती स्वार्थभावना इसको असामाजिक बनाता चला जा रहा है। 'बाजारवाद का वर्चस्व और मध्यवर्ग' शीर्षक द्वितीय अध्याय में उपर्युक्त तत्वों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में मध्यवर्गीय स्वरूप एवं उसका विश्लेषण किया गया है। तदनन्तर दिखाया गया है कि अमरकांत के कथा साहित्य ने किस तरह से मध्यवर्गीय समाज को अपने भीतर समाहित किया है। मध्यवर्गीय समाज के व्यक्ति का सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक पक्ष का चित्रण किया गया

है। मध्यवर्गीय समाज के राजनीतिक जीवन में आजादी के तुरन्त वाद वदलाव आना प्रारंभ हो गया था। अवसरवादी मध्यवर्ग मौका देखते ही अपनी गोटी वैठाने लगा। वहुत से ऐसे लोग राजनीति में वड़े आसनों पर आरूढ़ हो गये जिनकी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में किसी भी प्रकार की भूमिका नहीं थी। रचनाकार राजनीति के कर्णधारों में आये इस तरह के परिवर्तन से दुखी हैं। उपन्यासों में इस बात का जिक्र भले कम मिलता है लेकिन इनकी कहानियों में इस स्थिति पर आक्रोश व्यक्त किया गया है। 'दर्पण' जैसी कहानियों में रचनाकार ने इस स्थिति का आकलन किया है। इस पर विस्तार से इस अध्याय में विचार किया गया है। राजनीति की गड़वड़ियों ने देश की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति को शोचनीय स्थिति में पहुचाई। इसका चित्रण अमरकांत ने अपने कथा साहित्य में किया है। मध्यवर्ग में आये वदलाव को ध्यान में रखते हुये रचनाकार द्वारा उल्लिखित स्थिति पर विचार किया गया है।

चतुर्थ तथा पंचम अध्याय में मध्यवर्गीय समाज के स्त्री तथा पुरुष पात्रों का अध्ययन-सामाजिक संवंध, पारिवारिक संवंध, व्यक्तिगत प्रेम, राजनैतिक संबंध, मानसिक विकृतियाँ, दाम्पत्य जीवन, विवाहेतर संबंध आदि को ध्यान में रखकर किया गया है। मध्यवर्गीय समाज के संवंधों में परिवर्तन आया। इन परिवर्तनों का विश्लेषण विस्तार से किया गया है। इस विश्लेषण में अमरकांत के प्रमुख उपन्यासों को सामने रखा गया है। कुछ उपन्यास ऐसे भी मिले जिनका विश्लेषण उपर्युक्त उपशीर्षकों के अन्तर्गत समाहित नहीं हो सका। कुछ उपन्यास ऐसे हैं जो मध्यवर्गीय पुरूष पात्र के लिये महत्वपूर्ण हैं लेकिन मध्यवर्गीय महिला पात्र के लिये कम महत्वपूर्ण है। ऐसी स्थिति में संवंधित अध्याय में ही विचार किया गया है। अमरकांत के उपन्यासों की महिला पात्र इनकी कहानियों की महिला पात्रों की तुलना में कम महत्वपूर्ण तथा निरीह हैं। उपन्यासों की महिलायें पुरुषों की कमजोरियों को सामने लाती हैं। उपन्यास की किसी भी महिला पात्र के द्वारा पुरुष पात्रप्रत्यक्ष विरोध नहीं मिलता। कहानियों में मध्यवर्गीय महिला पात्र पुरुष पात्र की कमजोरियों पर डाँट लगाती हैं। कहा जा सकता है कि कहानियों की महिला पात्र पुरुष पात्रों की तुलना में ज्यादा मजवूत हैं। इसके कारणों का अध्ययन इन दोनों अध्यायों में किया गया है।

षष्ठ अध्याय अमरकांत के कथा साहित्य में व्यंग्य संवंधी अध्ययन है। अमरकांत व्यंग्यकार नहीं हैं। इस वात को इन्होंने कई बार स्वीकार किया है। इनके साथ लिये गये साक्षात्कार में कथाकार ने कहा भी 'मुझे तो समग्र जीवन को लेना है। जीवन को लेते समय हर प्रकार के संवेगों का सहारा लेना पड़ता है। हास्य व्यंग्य का भी सहारा लेना पड़ता है। हास्य व्यंग्य कथाकार के लिये वहुत जरूरी सहारा होता है। रचनाकार विवरण भी देता होतो उस समय उसे हास्य व्यंग्य सहायता पहुचाते हैं। अन्यथा विवरण नीरस हो जायेगा।' इसके वावजूद आलोचकों ने इन्हें हरिशंकर परसाई के समान व्यंग्यकार माना है। स्थितियों की विसंगति से इन्होंने व्यंग्य की सृष्टि की है। व्यंग्य इनकी संवेदना का प्रमुख अंग है। मध्यवर्गीय समाज जहाँ सुविधाओं को सवसे ज्यादा अपनी झोली में डालना चाहता है, वहीं निम्नमध्यवर्गीय समाज अमानवीय व्यवस्था के जंगल का शिकार सवसे ज्यादा होता है। इस जंगलराज में फँसे जन की चेष्टाओं आदि के द्वारा रचनाकार ने व्यंग्य का वितान रचा है। इन वातों को ध्यान में रखते हुये इस अध्याय का कलेवर विकसित किया गया है।

अन्तिम अध्याय है 'अमरकांत के कथा साहित्य में वर्गीय संघर्ष: एक विश्लेषण।'इसमें पुरुष-स्त्री-संघर्ष, शोषक-शोषितों का संघर्ष, समवर्गीय संघर्ष, पीढ़ियों के संघर्ष को रखा गया गया है।यहाँ प्रयास यह रहा है कि मध्यवर्गीय समाज में होने वाले इस संघर्ष को सामने लाया जाय।

अंत में उपसंहार है।इसमें शोध प्रबंध के हिसाब से अमरकांत का मूल्यांकन किया गया है।

अमरकांत जी का एक साक्षात्कार उनके निवास स्थान इलाहाबाद के पंचपुष्प एपार्टमेंट में लिया गया था।उसको इस प्रबंध के साथ दिया जा रहा है।इस साक्षात्कार के माध्यम से ज्यादातर वे प्रश्न पूछे गये हैं जिनके माध्यम से मध्यवर्गीय समाज रचनाओं का संबध उजागर हो सके।

पूरे शोध प्रबंध में शोधकर्ता का प्रयास रहा है कि कहीं भी आलोचना पर अपनी पसंदगी या नापसंदगी भारी न होने पाये।अमरकांत के विषय में विभिन्न आलोचकों के मंतव्यों और टिप्पणियों से जहाँ कहीं भी शोधार्थी की मतभिन्नता रही है, वहाँ अति विनम्रता के साथ खंडन किया गया है।

यह शोध प्रबंध डॉ. अरुण होता, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उत्तर बंग विश्वविद्यालय दार्जिलिंग के सुयोग्य निर्देशन में पूरा किया गया है।डॉ. होता मेरे गुरू जी हैं एवं अग्रज के समान।इनको भइया कहने में जितनी सहजता महसूस करता हूँ उतना सर कहने में नहीं।निर्देशन के समय कड़ियल गुरू की भूमिका में नज़र आने वाले भइया ने बड़े भाई की तरह मुझे मेरे तमाम भटकाव से बचाया है।शोध कार्य के दौरान जिस काम को महत्वपूर्ण माना उसे ही प्राथमिकता के साथ संपन्न करवाया।उस समय वे बातें मुझे अच्छी नहीं लगीं थीं।उनके अभिभावकत्व का महत्व सही समय के आने पर पता चलता गया।भइया मेरे बारे में मुझसे ज्यादा जानते हैं।प्रगतिशील सोच तथा सही भाषिक संज्ञान उन्हीं की कृपा से मुझे प्राप्त हुआ है।मेरा रोम-रोम उनका ऋणी है।उनके प्रति शाब्दिक आभार प्रकट करना मेरे वश की बात नहीं है।

शोध कार्य को पूरा करते समय मेरी पत्नी अनीता ने समस्त पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उठाते हुये मुझे मुक्त कर दिया था।उनसे जितना हो सका उन्होंने सहयोग किया।पत्नी के प्रति आभार-प्रदर्शन मात्र औपचारिकता है।कार्य के दौरान अनेक मित्रों का सहयोग निरन्तर मिलता रहा।कुछ को छोड़कर सबका नाम लेना संभव नहीं है।उत्तर बंग विश्वविद्यालय दार्जिलिंग के हिन्दी विभाग के सहयोगी अध्यापक डॉ.मनीषा झा एवं डॉ.सुनील द्विवेदी मेरे मित्र हैं।इनका सहयोग सही समय पर मिला।मित्र विनय पटेल से पुस्तकों का सहयोग मिला।इन सबके प्रति आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है।

संत जोसेफ्स महाविद्यालय दार्जिलिंग, हिन्दी हिमाचल भवन दार्जिलिंग, नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता, राममंदिर पुस्तकालय कोलकाता,पुस्तकालय अध्यक्षों तथा कर्मचारियों के प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञता है जिन्होंने बड़ी तत्परता के साथ समय-समय मेरी सहायता की।

कृतज्ञ हूँ मैं अपने प्रिय रचनाकार अमरकांत जी का। जिन्होंने पूरे दो दिन मेरे लिये सस्नेह आरक्षित रखे, बड़ी आत्मीयता के साथ मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये। ये दो दिन मेरे लिये कई अर्थों में अविस्मरणीय रहेंगे।

आभार प्रकट करता हूँ अनेक हिन्दी आलोचकों, चिन्तकों, बुद्धिजीवियों का जिनकी सूची बहुत लंबी है। और अंत में, मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ उन्हीं लोगों के प्रति जिन्होंने मेरा उत्साह-वर्द्धन किया और शोध-कार्य को संपन्न होने दिया।

Sanjay Kumar
(संजय कुमार)
रजि. संख्या 168/Ph.D/Hin/1715(R)05(H)
वर्ष 2005